REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

# सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के किशोरवय विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन

रामकिशोर विश्वकर्मा
शोधार्थी, शिक्षा विभाग ,
स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर.

## सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के किशोरवय विद्यार्थियों के नैराश्य का अध्ययन करना है। शोध के लिए सागर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 1000 विद्यार्थियों को चयन किया गया है जिसमें 500 छात्र एवं 500 छात्राऐं है। नैराश्य का अध्ययन करने के लिए डॉ. एन.एस. चौहान एवं डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित ''नैराश्य परीक्षण मापनी'' का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया है। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ है कि सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के किशोरवय विद्यार्थियों के नैराश्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

## प्रस्तावना

वर्तमान समय में देश के सभी क्षेत्रों में नवीनता के पदार्पण ने सामाजिक बदलाव की गति को तेज कर दिया है, जिसके कारण परस्पर पहचान के परम्परागत मूल्यों का ह्रास हो रहा है। प्रजातंत्रीय परिवेश में व्यक्ति के पीछे स्वतंत्र एवं उन्मुक्त विचारों की अवधारणा प्रबल होती जा रही है। एक ओर जहाँ तकनीकी पुनर्जागरण में अनेक संभावनाओं को बना सकने की सामर्थ्य दी है, वहीं दूसरी ओर अनेक समाजों में आधुनिकीकरण की होड़ ने व्यक्तियों को तनाव, निराशा एवं संघर्ष की स्थितियों में डाल दिया है। व्यक्ति द्रुतगामी परिवर्तनों से लाभान्वित होने के लिए संघर्षरत होता है और असफलताओं के साथ उसे तनाव एवं निराशा की स्थिति का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की स्थिति का किशोरावस्था की पीढ़ी पर इतना अधिक असर पड़ रहा है कि उनमें असफलता मिलने से निराशा का होना स्वभाविक है और समायोजन एवं संवेगात्मक भावनाओं पर इस प्रकार की समस्याओं का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में इस प्रकार के परिणाम देखने में आ रहे है। उसका प्रमुख कारण है भावी किशोरों को सही समय पर उचित मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं सहयोग की कमी, जो कि वर्तमान आवश्यकताओं के लिए बहुत ही जरूरी है।

आज शिक्षा की व्यवस्था है उसमें किशोरों के पालकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि प्रगतिशील समाज में प्रत्येक कदम पर किशोरों को प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है जो किशोरों में मानसिक तनाव, निराशा की स्थिति उत्पन्न कर देता है ऐसे में परिवार की भूमिका किशोरों की निराशा को नियंत्रण रखने में अहम भूमिका उत्पन्न करती है। अभिभावक उन्हें शैक्षिक कार्यों, सामाजिक कार्यों में सहयोग दे तो किशोर छात्र–छात्राओं को वर्तमान समस्याओं को हल करने या समायोजन करने में किसी प्रकार की कठिनाईयों का सामना न करना पड़े। जिससे उनमें उत्साह एवं अभिरूचि का विकास हो, वे राष्ट्र के लिए कुछ रचनात्मक कार्य कर सकने के लिए कारगर कार्य कर सकेंगे।

सभी विद्यार्थियों में सामान्यतः स्वभाववश आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षाओं से वे घिरे रहते है अपनी इच्छाओं और चाहतों को पूरा करने के लिए वे पूरी तरह से संघर्ष भी करते है फिर भी कभी–कभी जैसा सोचा जाता है वैसी संतोषजनक उपलब्धि उन्हें नहीं मिल पाती। अपने प्रयत्नों में लगातार मिलने वाली विफलता उन्हें उस

स्थिति या हालात में लाकर खड़ी कर देती है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में नैराश्यों या कुण्ठा की स्थिति कहा जाता है।

**कैरोल** के अनुसार, ''कुण्ठा को किसी भी अभिप्रेरक की संतुष्टि में आने वाली बाधा फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थिति या परिस्थिति के रूप में जाना जा सकता है।''

**गुड** के अनुसार, ''कुण्ठा से अभिप्राय किसी भी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति में आने वाली बाधा से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव से है।''

**एन.एल. मन** के अनुसार, ''कुण्ठा किसी भी प्राणी की उस अवस्था की द्योतक है जो किसी अभिप्रेरणात्मक व्यवहार की संतुष्टि के असाध्य एवं असम्भव हो जाने के फलस्वरूप पैदा होती है।''

## अध्ययन के उद्देश्य –

1. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य का अध्ययन करना।

## अध्ययन की परिकल्पनाऐं –

1. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

## उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में नैराश्य के मापन के लिए डॉ. एन.एस. चौहान एवं डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित ''नैराश्य परीक्षण मापनी' का प्रयोग किया गया है।

## न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सागर जिले के शहरी एवं ग्रामीण स्कूलों के 16 से 18 वर्ष के बीच के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के 1000 विद्यार्थी सम्मिलित किए गए है, जिसमें 500 छात्र एवं 500 छात्राऐं हैं।

**शोध विधि** – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## प्रदत्तों का सारणीयन

तालिका क्र.1

सवर्ण छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन

| क्र. | नैराश्य के घटक | $N_1$-250 सवर्ण छात्र | | $N_2$-250 सवर्ण छात्राऐं | | सी. आर. का मान | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान | मानक विचलन | | *0.05* | *0.01* |
| 1 | प्रतिगमन | 33.40 | 8.15 | 33.80 | 7.25 | 0.58 | सार्थक अंतर नहीं है | सार्थक अंतर नहीं है |
| 2 | स्थिरता | 30.42 | 7.45 | 30.34 | 8.63 | 0.11 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर नहीं है |
| 3 | समर्पण | 29.50 | 7.60 | 32.48 | 7.12 | 4.52 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर है |
| 4 | आक्रमकता | 33.51 | 8.52 | 31.52 | 8.16 | 2.67 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर है |
| 5 | समग्र नैराश्य | 126.83 | 15.15 | 128.14 | 15.57 | 0.95 | सार्थक अंतर नहीं है | सार्थक अंतर नहीं है |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | df-498 | | | | | | 1.96 | 2.58 |

तालिका क्र.1 में सवर्ण छात्रों एवं सवर्ण छात्राओं के नैराश्य की तुलना को दर्शाया गया है। प्रतिगमन के स्तर पर सवर्ण छात्रों का मध्यमान (33.40) एवं सवर्ण छात्राओं का मध्यमान (33.80) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सवर्ण छात्रों एवं छात्राओं के प्रतिगमन का स्तर समान है।

स्थिरता के स्तर पर सवर्ण छात्रों काा मध्यमान (30.42) एवं सवर्ण छात्राओं का मध्यमान (30.34) है। 0. 05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सवर्ण छात्रों एवं छात्राओं के स्थिरता का स्तर समान है।

समर्पण के स्तर पर सवर्ण छात्रों का मध्यमान (29.50) एवं सवर्ण छात्राओं का मध्यमान (32.48) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः सवर्ण छात्राओं के समर्पण का स्तर सवर्ण छात्रों से उच्च है।

आक्रमकता के स्तर पर सवर्ण छात्रों का मध्यमान (33.51) एवं सवर्ण छात्राओं का मध्यमान (31.52) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः सवर्ण छात्रों का आक्रमकता का स्तर सवर्ण छात्राओं में उच्च है।

समग्र नैराश्य के स्तर पर सवर्ण छात्रों का मध्यमान (126.83) एवं सवर्ण छात्राओं का मध्यमान (128.14) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सवर्ण छात्रों एवं सवर्ण छात्राओं का समग्र नैराश्य का स्तर समान है।

## तालिका क्र.2
## अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन

| क्र. | नैराश्य के घटक | $N_1$-250 अनुसूचित जाति के छात्र | | $N_2$-250 अनुसूचित जाति की छात्राऐं | | सी. आर. का मान | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान | मानक विचलन | | ***0.05*** | ***0.01*** |
| 1 | प्रतिगमन | 31.55 | 7.75 | 33.51 | 7.62 | 2.85 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर है |
| 2 | स्थिरता | 29.50 | 8.15 | 31.10 | 8.37 | 2.16 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर नहीं है |
| 3 | समर्पण | 31.60 | 7.14 | 32.78 | 7.93 | 1.75 | सार्थक अंतर नहीं है | सार्थक अंतर नहीं है |
| 4 | आक्रमकता | 32.30 | 8.10 | 30.24 | 8.26 | 0.21 | सार्थक अंतर नहीं है | सार्थक अंतर नहीं है |
| 5 | समग्र नैराश्य | 124.95 | 16.10 | 127.63 | 14.45 | 1.97 | सार्थक अंतर है | सार्थक अंतर नहीं है |
| | df-498 | | | | | | 1.96 | 2.58 |

तालिका क्र. 2 में अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य की तुलना को दर्शाया गया है। प्रतिगमन के स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान (31.55) एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का मध्यमान (33.51) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं का प्रतिगमन का स्तर उच्च है।

स्थिरता के स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान (29.50) एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का मध्यमान (31.10) है। 0.05 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः अनुसूचित जाति के छात्रों एवं छात्राओं का स्थिरता का स्तर समान है।

समर्पण के स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान (31.60) एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का मध्यमान (32.78) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के समर्पण का स्तर समान है।

आक्रमकता के स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान (32.30) एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का मध्यमान (30.24) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमकता का स्तर समान है।

समग्र नैराश्य के स्तर पर अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान (124.95) एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं का मध्यमान (127.63) है। 0.05 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के समग्र नैराश्य का स्तर समान है।

## निष्कर्ष –

1. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं के प्रतिगमन का स्तर समान पाया गया।
2. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं की स्थिरता का स्तर समान पाया गया।
3. सवर्ण छात्राओं के समर्पण का स्तर सवर्ण छात्रों से उच्च पाया गया।
4. सवर्ण छात्र का आक्रमकता का स्तर सवर्ण छात्राओं से उच्च पाया गया।
5. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं का समग्र नैराश्य का स्तर समान पाया गया।
6. अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं का प्रतिगमन का स्तर उच्च पाया गया।
7. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं का स्थिरता का स्तर समान पाया गया।
8. अनुसूचित जाति के छात्रों एवं छात्राओं के समर्पण का स्तर समान पाया गया।
9. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आक्रमकता का स्तर समान पाया गया।
10. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के समग्र नैराश्य का स्तर समान पाया गया।

## परिकल्पनाओं का सत्यापन

1. सवर्ण छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
   अतः परिकल्पना क्र. 1 स्वीकृत की जाती है।
2. अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के नैराश्य के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
   अतः परिकल्पना क्र. 2 स्वीकृत की जाती है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पाठक, पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2009।
2. कपिल, एच.के., सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2010।
3. मंगल, एस.के., शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई., लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2012।
4. सिंह, अरूण कुमार, उच्चतर मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, बंगला रोड, इलाहाबाद, 2012।